Chap 01: समष्टि अर्थशास्त्र का परिचय

INRODUCTION OF MACROECONOMICS

हम पढेंगे:

समष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ एवं विशेषताएं, समष्टि अर्थशास्त्र का क्षेत्र एवं प्रकृति, वस्तुओं के प्रकार, निवेश, स्टॉक तथा प्रवाह, प्रवाह के प्रकार, आय का चक्रीय प्रवाह

समष्टि अर्थशास्त्र का अर्थ:

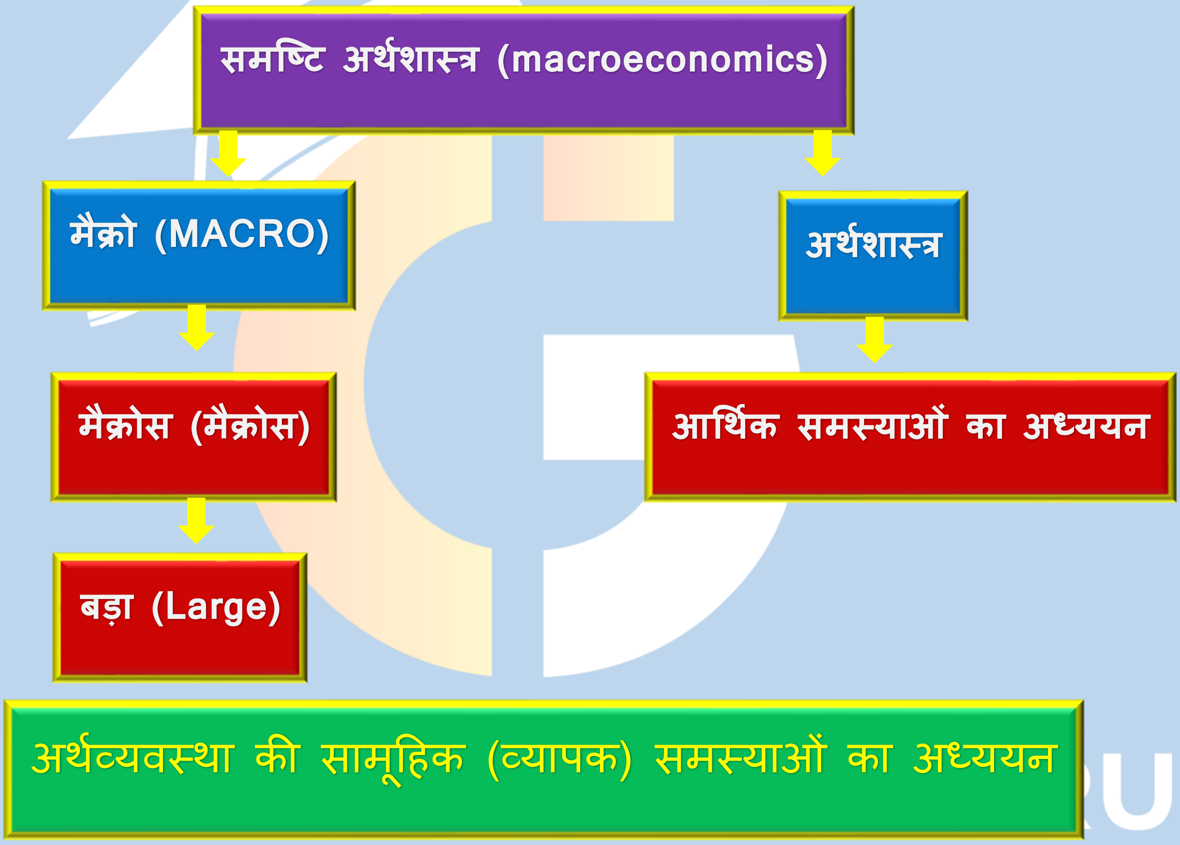

इस प्रकार मैक्रो बड़े समूह से संबंधित है।

अतः

समष्टिगत अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित समूह जैसे राष्ट्रीय राष्ट्रीय बचत राष्ट्रीय विनियोग कुल रोजगार कुल उत्पादन व सामान्य कीमत स्तर आदि का अध्ययन किया जाता है।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*

परिभाषाएं:

प्रोफेसर बोल्डिंग के अनुसार, **"समष्टि का आर्थिक सिद्धांत अर्थशास्त्र का वह भाग जो अर्थशास्त्र के कुल औसत तथा कुल समूह का अध्ययन करता है"।**

समष्टि अर्थशास्त्र की विशेषताएं:

- संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित
- समष्टि इकाइयों का अध्ययन
- समष्टि आर्थिक चर- जैसे राष्ट्रीय बचत और विनियोग सकल, राष्ट्रीय उत्पाद, राष्ट्रीय आय और रोजगार आदि।
- समष्टिगत उपकरण- जैसे राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति तथा आय नीति।

समष्टिगत अर्थशास्त्र के क्षेत्र

1. **राष्ट्रीय आय का सिद्धांत**
2. **रोजगार का सिद्धांत**
3. **मुद्रा की पूर्ति का सिद्धांत**
4. **सामान्य कीमत स्तर का सिद्धांत**
5. **आर्थिक विकास का सिद्धांत**
6. **वितरण का समष्टिगत सिद्धांत**
7. **व्यापार चक्रों का सिद्धांत**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

समष्टिगत अर्थशास्त्र का महत्व:

1. जटिल अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए आवश्यक
2. आर्थिक नीतियों के निर्धारण में महत्व
3. आर्थिक विकास का अध्ययन
4. व्यष्टिगत अर्थशास्त्र के अध्ययन में उपयोगी
5. आर्थिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन में महत्व
6. अंतरराष्ट्रीय तुलनाए

समष्टि अर्थशास्त्र की कुछ मूल अवधारणाएं

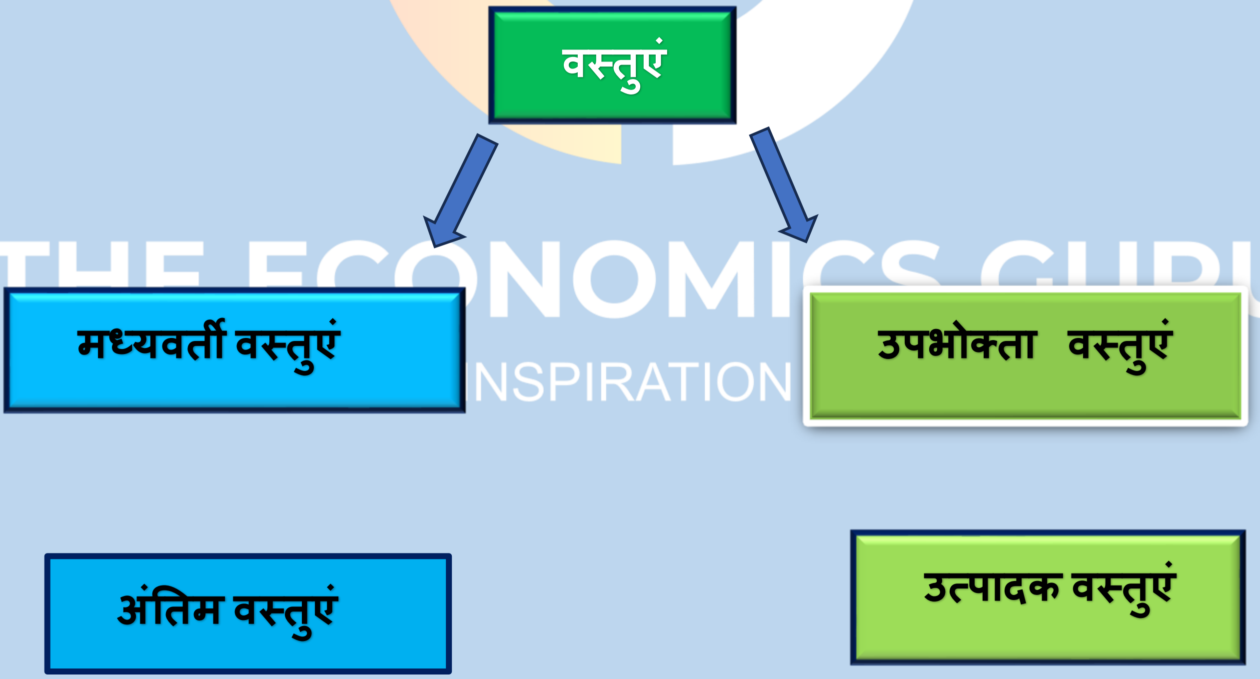

मध्यवर्ती वस्तु

ऐसी वस्तु है जिनका उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जाता है उसे मध्यवर्ती वस्तु कहते हैं।

इन वस्तुओं को कच्चे माल के रूप में भी जाना जाता है। इन वस्तुओं का पुनः बिक्री होता है।

जैसे चीनी के उत्पादन के लिए गन्ने का उपयोग।

अंतिम वस्तुएं

ऐसी वस्तुएं जिनका अंतिम रूप से उपभोक्ताओं के द्वारा प्रयोग किया जाता है। उन्हें अंतिम वस्तुएं कहते हैं

इन वस्तुओं का उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए नहीं किया जाता है। अर्थात यह वस्तुएं पुनः बिक्री के लिए प्रयोग नहीं होती है।

उदहारण:

THE ECONOMICS GURU

अंतिम वस्तुओं तथा मध्यवर्ती वस्तुओं में अंतर बताइए

मध्यवर्ती वस्तुएं	अंतिम वस्तुएं
मध्यवर्ती वस्तु का उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन हेतु कच्चे माल के रूप में किया जाता है।	अंतिम वस्तु का उपयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन हेतु कच्चे माल के रूप में नहीं किया जाता है
लाभ के लिए मध्यवर्ती वस्तुओं का पुनः बिक्री किया जाता है।	लाभ के लिए अंतिम वस्तुओं का पुनः बिक्री नहीं होता है।
यह वस्तु है अंतिम प्रयोग करता द्वारा उपयोग के लिए प्रयोग नहीं होती हैं।	यह वस्तुएं अंतिम प्रयोग करता द्वारा उपयोग के लिए तैयार होती हैं।
इन वस्तुओं को राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय के अनुमान में सम्मिलित नहीं किया जाता है।	इन वस्तुओं को राष्ट्रीय उत्पाद अथवा राष्ट्रीय आय के अनुमान में सम्मिलित किया जाता है।

उपभोक्ता वस्तुएं

वे वस्तुएं जो मानवीय आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करती है उपभोक्ता वस्तुएं कहलाती हैं।

THE ECONOMICS GURU

उपभोक्ता 4 वर्गों में बांटा जा सकता है:

- टिकाऊ वस्तुएं
- अर्ध टिकाऊ वस्तुएं
- गैर- टिकाऊ वस्तुएं
- गैर पदार्थ वस्तु है अथवा सेवाएं

टिकाऊ वस्तुएं:

वे वस्तुएं जिनका जीवन का लंबी अवधि (1 वर्ष से अधिक) तक होता है अर्थात एक उपभोक्ता ऐसी वस्तुओं का एक लंबे समय तक उपभोग करता रहता है, उन्हें टिकाऊ वस्तु कहते हैं।

जैसे कार, मोटरसाइकिल, मोबाइल, टेलीविजन आदि।

अर्ध टिकाऊ वस्तुएं:

ऐसी वस्तुएं जिनका जीवनकाल 1 वर्ष से कम होता है उन्हें अधिक टिकाऊ वस्तु कहते हैं अर्थात ऐसी वस्तुएं है शीघ्र नष्ट भी नहीं होती है और दीर्घावधि तक उपयोग भी नहीं लिया जा सकता है।

जैसे: कपड़े, क्रोकरी आदि।

गैर- टिकाऊ वस्तुएं/ एकल प्रयोग वस्तुएं:

ऐसी वस्तुएं है जिनका प्रयोग उपभोक्ता एक बार ही करता है उन्हें एकल प्रयोग वस्तुएं या 11 टिकाऊ वस्तु कहते हैं

जैसे दूध, चीनी, सब्जियां, तेल आदि।

खाद्य सामग्री

फल व सब्जियां

गैर पदार्थ वस्तुयें अथवा सेवाएं:

ऐसी वस्तुएं जिनका कोई भौतिक स्वरूप नहीं होता है। जिन्हें हम देख या छू नहीं सकते हैं बल्कि उनकी सेवाओं का अथवा उपयोगिता का उपयोग किया जा सकता है। उन्हें सेवाएं या गैर पदार्थ वस्तुएं कहते हैं।

शिक्षा

चिकित्सा

वकालत

बीमा

नाई

उत्पादक वस्तुएं

जिन वस्तुओं का प्रयोग अन्य वस्तुओं के उत्पादन में होता है उन्हें हम उत्पादक वस्तुएं कहते हैं

जैसे मशीनें, औजार, भवन, कच्चा माल आदि सभी उत्पादक वस्तुएं हैं।

इन वस्तुओं का प्रयोग उत्पादकों द्वारा और अधिक वस्तुओं के उत्पादन के लिए किया जाता है।

पूंजीगत वस्तुएं

पूंजी वस्तु के उस स्टॉक को सूचित करती है जिनका प्रयोग उत्पादन में किया जाता है और जो स्वयं उत्पादित किया जाता है।

दूसरे शब्दों में, पूंजी उत्पादक वस्तुओं को सूचित करती है, जिसका प्रयोग उपभोग के लिए नहीं किया जाता बल्कि अगली उत्पादन प्रक्रिया में पुनर्विनियोजित कर दिया जाता है।

फैक्ट्री

औजार

वाहन

मशीनरी

स्टॉक एवं प्रवाह

स्टॉक (stock)

स्टॉक का संबंध एक समय बिंदु या किसी निश्चित समय से होता है। स्टॉक का समय काल नहीं होता है।

जैसे दूरी, एक टैंक में रखा पानी, मुद्रा की मात्रा, पूंजी आदि।

प्रवाह (Flow)

प्रवाह मात्रा है जो एक समय अवधि में मापी जाती है। प्रवाह का समय काल होता है।

जैसे प्रतिमाह, प्रति मिनट, प्रतिवर्ष, प्रतिदिन आदि।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

स्टाक तथा प्रवाह चरों में अंतर

स्टॉक	प्रवाह
स्टॉक का अर्थ किसी एक विशेष समय बिंदु पर मापी जाने वाली आर्थिक चर की मात्रा है।	प्रवाह का अर्थ एक आर्थिक चर की वह मात्रा है जिसे इसी समय अवधि के दौरान मापा जाता है।
स्टॉक का कोई समय परिमाप नहीं होता है।	प्रवाह का समय परिमाप होता है। जैसे प्रतिदिन, प्रतिघंटा, प्रतिमास, प्रतिवर्ष आदि।
स्टॉक एक स्थैतिक अवधारणा है।	प्रवाह एक गत्यात्मक अवधारणा है।
उदाहरण: मुद्रा का परिमाप, धन, गोदाम में रखा गेहूं, टंकी में रखा पानी आदि	उदाहरण: उपभोग, निवेश, आय, नदी में जल आदि।

आय का चक्रीय प्रवाह (Circular Flow of Income)

अर्थ:

उत्पादन आय तथा व्यय का जो निरंतर प्रभाव होता है उसे आय का चक्रीय प्रवाह कहा जाता है।

इस प्रभाव का न तो कोई आरंभ होता है, न ही कोई अंत होता है।

उत्पादन आय को, आय व्यय को, फिर वह व्यय उत्पादन को और उत्पादन आय को जन्म देता है।

परिभाषा

सामान्य परिभाषा, "आय के चक्रीय प्रवाह से अभिप्राय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मौद्रिक आय के प्रवाह या वस्तुओं और सेवाओं के चक्रीय रूप में प्रवाह से है"।

रिचर्ड लिप्से के अनुसार, **"आय का चक्रीय प्रवाह, घरेलू फार्मों एवं घरेलू परिवारों के बीच भुगतानों एवं प्राप्तियों का प्रवाह होता है"।**

चक्रीय प्रवाह के प्रकार

चक्रीय प्रवाह दो प्रकार का होता है:

- **वास्तविक प्रवाह**
- **मौद्रिक प्रवाह**

वास्तविक प्रवाह (Real Flow):

परिवारों से फर्मो को साधन सेवाओं (जैसे भूमि, श्रम, पूंजी आदि) एवं फर्मों से परिवारों को वस्तुओं या सेवाओं का जो प्रवाह होता है उसे वास्तविक प्रवाह कहते हैं।

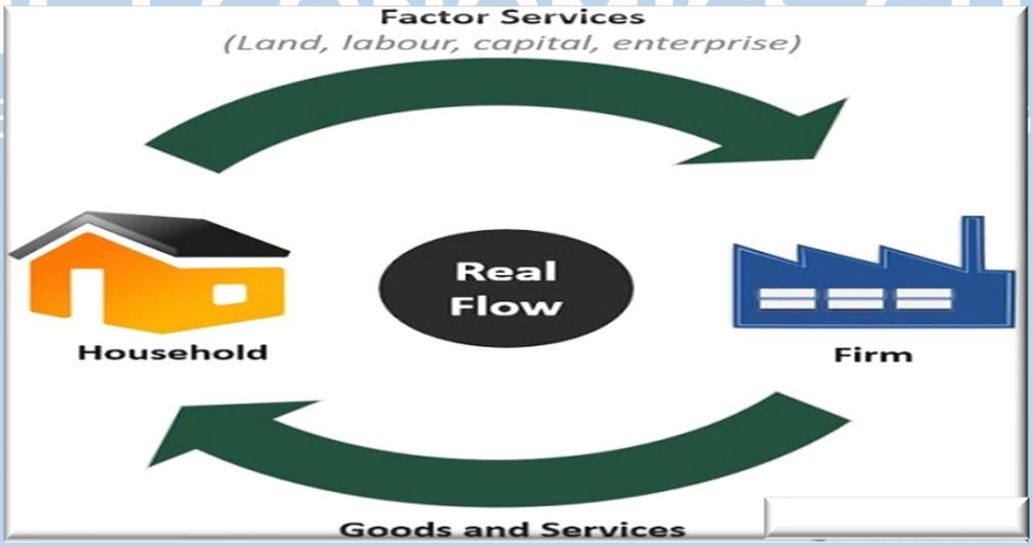

मौद्रिक प्रवाह (Money Flow):

फर्मो से परिवारों को साधन सेवाओं के बदले मौद्रिक भुगतान और परिवारों से फर्मो को बस्तुओं व सेवाओं के बदल मौद्रिक भुगतान के रूप में जो चक्र चलता रहता है, वहीं मौद्रिक प्रवाह कहलाता है।

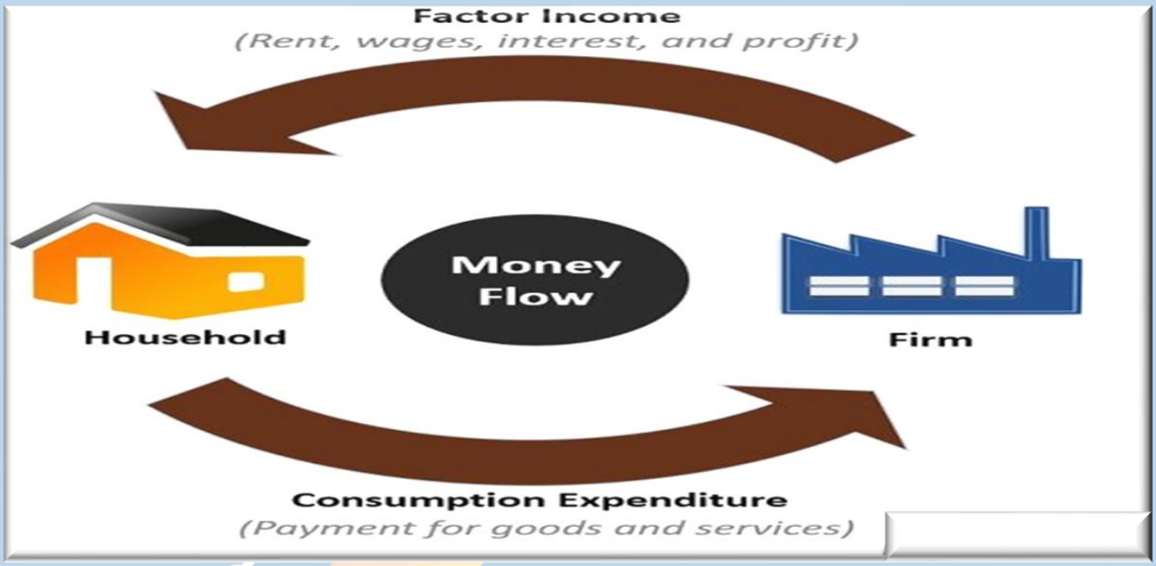

आय के चक्रीय प्रवाह के मॉडल (Models of Circular Flow of Income)

- आय के **चक्रीय** प्रवाह का द्वि- क्षेत्रीय मॉडल
- आय के चक्रीय प्रवाह का त्रिक्षेत्रीय मॉडल
- आय के चक्रीय प्रवाह का चतुर्थ क्षेत्रीय मॉडल

THE ECONOMICS GURU

आय के चक्रीय प्रवाह का द्वि - क्षेत्रीय मॉडल

(Two Sector Model of Circular Flow of Income)

आय के चक्रीय प्रवाह के दो क्षेत्रीय मॉडल में अर्थव्यवस्था के केवल दो क्षेत्रों ***घरेलू क्षेत्र (परिवार)*** तथा ***उत्पादक क्षेत्र (फर्म)*** के बीच होने वाले चक्रीय प्रवाह का अध्ययन किया जाता है।

घरेलू क्षेत्र: यह क्षेत्र उत्पादक क्षेत्र को उत्पादन के कारकों की सेवाएं प्रदान करता है उत्पादक क्षेत्र द्वारा अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं का उपभोग करता है।

उत्पादक क्षेत्र: यह क्षेत्र अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं को उत्पादन करता है। यह क्षेत्र उत्पादन के कारकों की सेवाओं जैसे श्रम, पूंजी आदि का प्रयोग करता है।

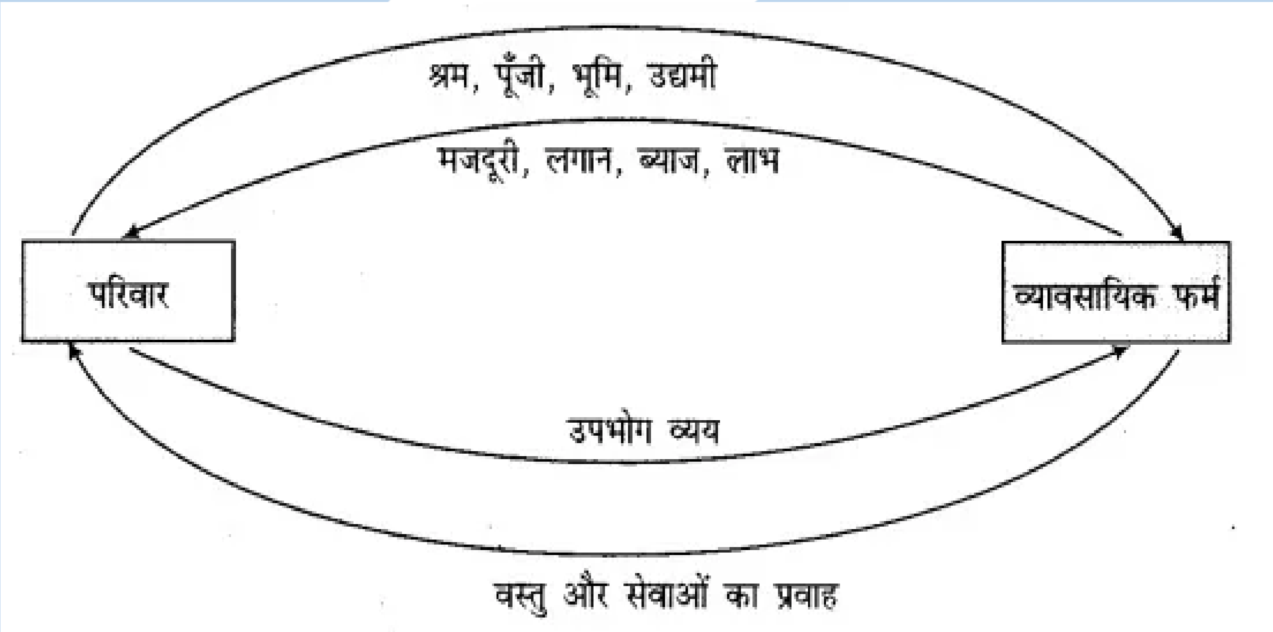

आय के चक्रीय प्रवाह का तीन क्षेत्रीय मॉडल

(Three Sector Model of Circular Flow of Income)

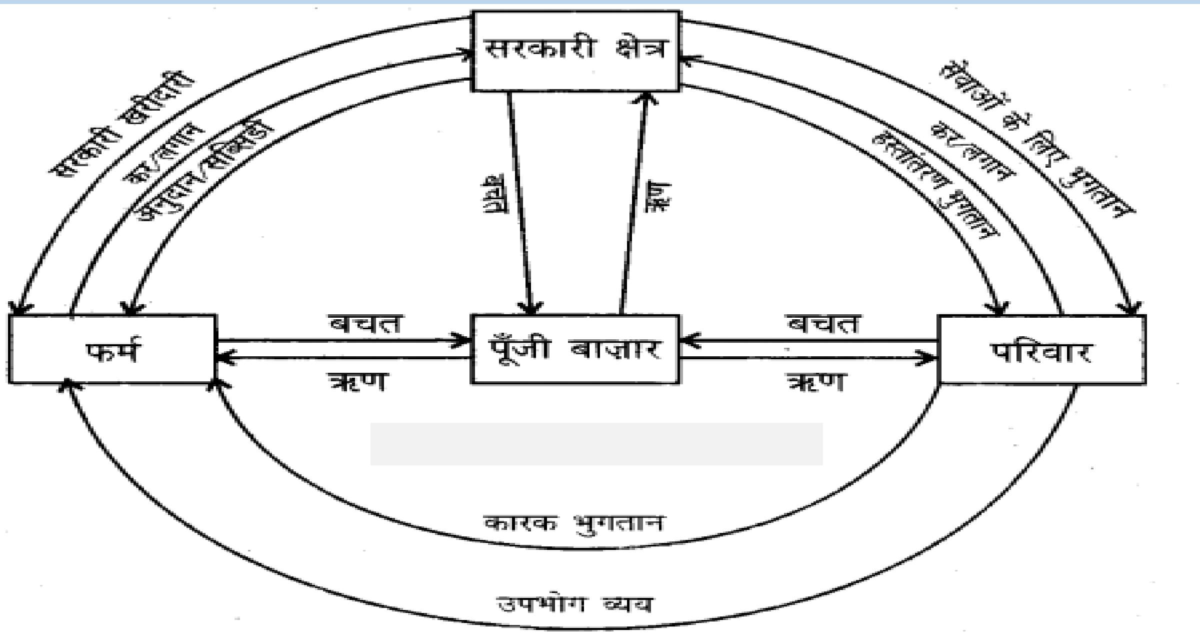

आय के चक्रीय प्रवाह का चार क्षेत्रीय मॉडल

(Four Sector Model of Circular Flow of Income):

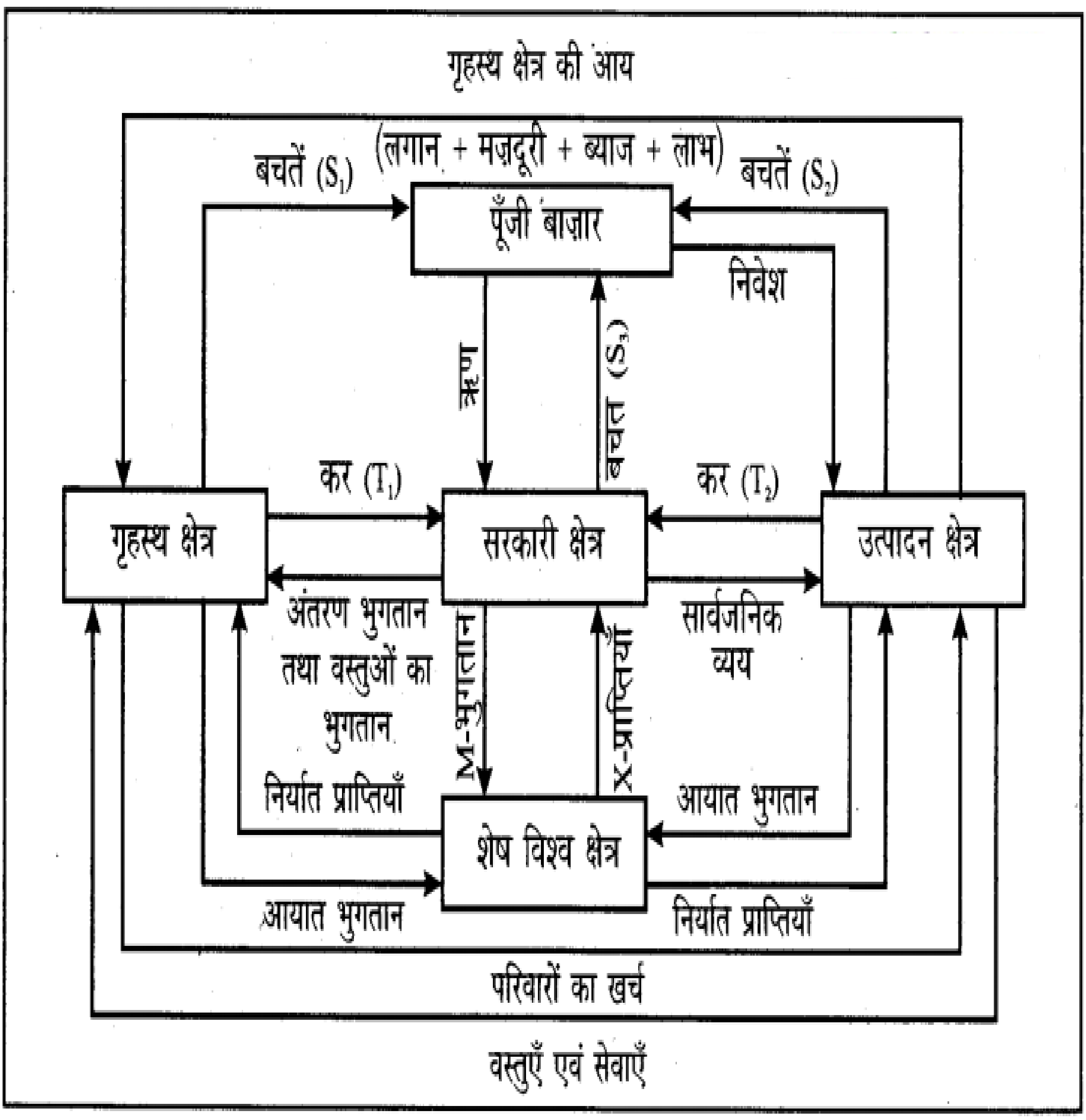

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षो के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free LIVE CLASS भी उपलब्ध है, हमारे YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU" पर । अभी subscribe कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*